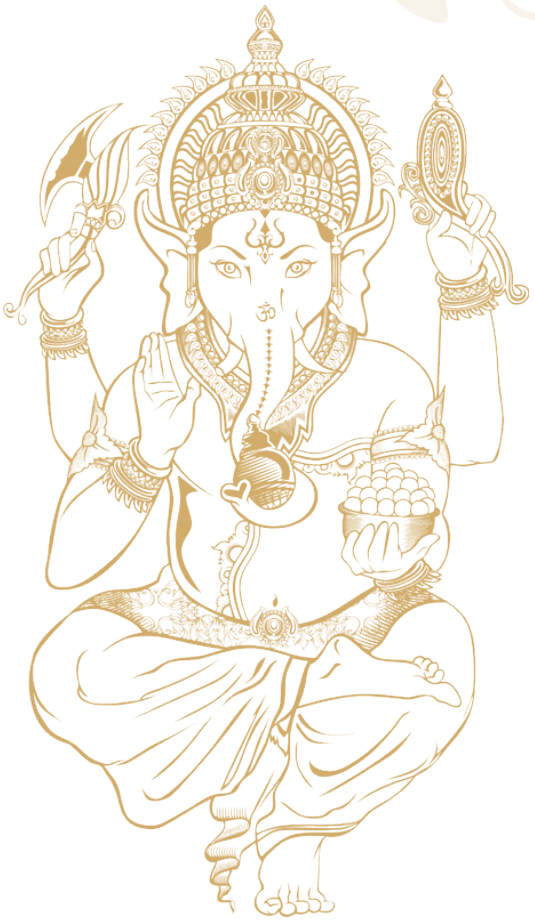

Mr. Jai mata di

04 Oct 2024

05:23 AM

Delhi

Model: Baby-Horoscope **Order No: 119260501**

तिथि 04/10/2024 **समय** 05:23:00 **वार** शुक्रवार **स्थान** Delhi **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:12:08
अक्षांश 28:39:00 उत्तर **रेखांश** 77:13:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:21:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	05:54:33 घं
वेलान्तर	00:11:22 घं
सूर्योदय	06:15:26 घं
सूर्यास्त	18:04:17 घं
चैत्रादि संवत	2081
शक संवत	1946
मास	आश्विन
पक्ष	शुक्ल
तिथि	2
नक्षत्र	चित्रा
योग	वैधृति
करण	बालव

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	मध्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	मृग
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	रा-राकेश
पाया(रा.-न.)	रजत-रजत
होरा	चंद्र
चौघड़िया	रोग

विंशोत्तरी

मंगल 3वर्ष 5मा 3दि
मंगल
04/10/2024
08/03/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	04/10/2024
बुध	04/09/2025
केतु	31/01/2026
शुक्र	02/04/2027
सूर्य	08/08/2027
चन्द्र	08/03/2028

योगिनी

मंगला 0वर्ष 5मा 26दि
पिंगला
31/03/2025
01/04/2027

पिंगला	11/05/2025
धान्या	11/07/2025
भ्रामरी	30/09/2025
भद्रिका	10/01/2026
उल्का	11/05/2026
सिद्धा	30/09/2026
संकटा	12/03/2027
मंगला	01/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			04:35:52	कन्या	उ०फाल्गुनी	3	सूर्य	शनि	---	0:00			
सूर्य			17:03:14	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	सम राशि	1.45	ज्ञाति	पितृ	अतिमित्र
चंद्र			00:08:27	तुला	चित्रा	3	मंगल	बुध	सम राशि	1.02	कलत्र	मातृ	जन्म
मंगल			22:12:04	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.66	अमात्य	भ्रातृ	विपत
बुध		अ	19:26:50	कन्या	हस्त	3	चंद्र	बुध	मूलत्रिकोण	1.15	मातृ	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु			27:05:20	वृष	मृगशिरा	2	मंगल	गुरु	शत्रु राशि	1.07	आत्मा	धन	जन्म
शुक्र			19:02:48	तुला	स्वाति	4	राहु	चंद्र	मूलत्रिकोण	0.94	पुत्र	कलत्र	सम्पत
शनि	व		19:57:42	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	मंगल	मूलत्रिकोण	1.34	भ्रातृ	आयु	सम्पत
राहु	व		12:26:39	मीन	उ०भाद्रपद	3	शनि	मंगल	सम राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु	व		12:26:39	कन्या	हस्त	1	चंद्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	अतिमित्र

लग्न-चलित

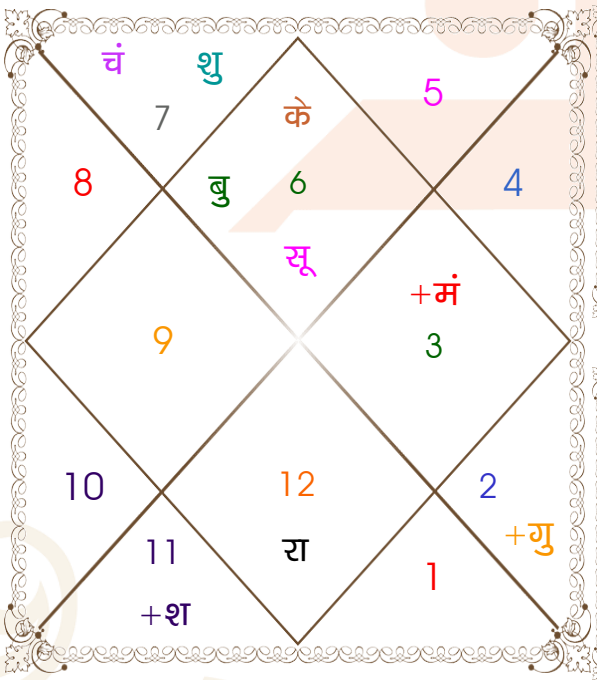

चन्द्र कुंडली

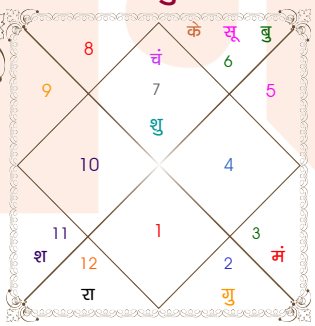

नवमांश कुंडली

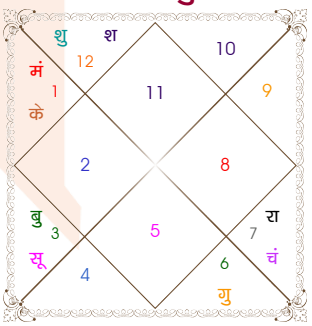

सर्वाष्टकवर्ग

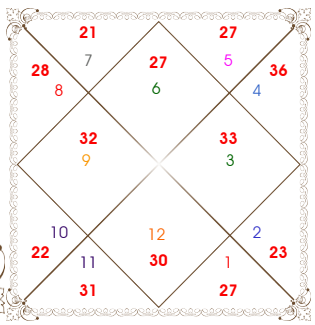

दशमांश कुंडली

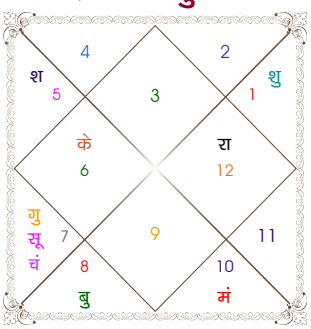

महन्त श्री पं जितेन्द्र कुमार शास्त्री S/O श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
श्री दोघडीया माता मंदिर नारायणपुर रोड़ निमडी सुरजनपुर थानागाजी
9414960706/ 9829674714
panditjidhogadyama@gmail.com

नक्षत्रफल

चित्रा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न होने के कारण आपकी जन्मराशि तुला तथा राशिस्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ग मृग, वर्ण शूद्र, नाड़ी मध्य, योनि व्याघ्र तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म का प्रथमाक्षर "र" या "रा" से प्रारम्भ होगा। यथा रमेश, रामकुमार आदि।

आप स्वभाव से ही धामिक प्रवृति के मनुष्य होंगे तथा देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में आस्था एवं सम्मान का भाव हमेशा विद्यमान रहेगा। आप सपरिवार अर्थात् स्त्री पुत्र सहित हमेशा सन्तुष्ट रहेंगे तथा जितनी भी प्राप्ति हो उसी के अनुसार अपना जीवन यापन करेंगे। धन वैभव तथा धान्यादि से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे इनके अभाव की आपको कभी भी अनुभूति नहीं होगी।

पुत्रदारयुतसंतुष्टो धनधान्य समन्वितः।
देव ब्राह्मण भक्तश्च चित्रायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक स्त्री तथा पुत्र सहित सन्तुष्ट रहने वाला, धनधान्यादि से परिपूर्ण रहने वाला तथा देवता एवं ब्राह्मणों का भक्त होता है।

नवीन वस्त्रों को धारण करने की आपके मन में प्रबल इच्छा रहेगी तथा गले में हार को भी आप धारण करने के लिए रूचिशील रहेंगे तथा इसे धारण भी करेंगे। आपके नेत्र सुन्दरता से परिपूर्ण रहेंगे। साथ ही आपका शारीरिक सौन्दर्य भी सुन्दर होगा।

चित्राम्बर माल्यधरः सुलोचनाङ्गश्च भवति चित्रायाम्।।
बृहज्जातकम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अनेक वस्त्र एवं मालाओं को धारण करने वाला, सुन्दर नेत्र तथा सुन्दर शरीर वाला होता है।

यदि कोई भी विशेष बात के आपके मन में हो तो आप उसे अपने मन में ही रखेंगे तथा अन्य व्यक्ति पर कभी भी प्रकट नहीं होने देगे। अपनी इस प्रवृति का पालन आप हमेशा करते रहेंगे। अपने समाज के आप एक प्रभावी तथा लोकप्रिय व्यक्ति होंगे। तथा उनमें पूर्ण मान सम्मान अजित करने में सफलता प्राप्त करेंगे। स्त्री वर्ग से भी आपका अनुराग रहेगा। अतः इनसे आपके मैत्री पूर्ण संबंध स्थापित रहेंगे।

चित्रायामति गुप्तशीलनिरतो मानी परस्त्रीरतः।।
जातकपरिजातः

अर्थात चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अपने मन की बात को गुप्त रखने वाला तथा

दूसरे पर प्रकट न करने वाला ऐसे स्वभाव से युक्त, सम्माननीय तथा दूसरे की स्त्रियों में अनुरक्त रहता है।

आप अपने प्रताप तथा पराक्रम से शत्रुपक्ष को संताप देने या हराने में हमेशा सफलता प्राप्त करेंगे। आपका कोई शत्रु विरोध या मुकाबला करने में असमर्थ रहेगा। नीति शास्त्र के आप महान ज्ञाता होंगे तथा नीति संबंधी कार्यो को चतुराई पूर्ण ढंग से सम्पन्न करेंगे। विभिन्न एवं नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने के लिए आप हमेशा उत्सुक रहेंगे। शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे तथा शास्त्रों के ज्ञान में आप अपनी बुद्धि का परिचय देंगे।

प्रतापसन्तापितशत्रुपक्षो नयेळतिदक्ष विचित्रवासः।
प्रसूतिकाले यदि यस्य चित्रा बुद्धिविचित्रा खलुतस्य शास्त्रे।।
जातकाभरणम्

अर्थात् चित्रा नक्षत्र में उत्पन्न मानव अपने प्रताप के द्वारा शत्रु को कष्ट पहुँचाने वाला, नीति शास्त्र में दक्ष, नाना प्रकार के वस्त्रों को धारण करने वाला तथा शास्त्रादि में अद्भुत बुद्धिवाला होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शरीर तथा मुखमंडल देखने में सुन्दर होगा तथा आंखे बड़ी बड़ी होंगी। आपके पास वाहनो की संख्या प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहेगी तथा समाज में सभी वर्गो से आपके संबंधो में आत्मीयता रहेंगी। आप वाहन तथा भूमि से शक्ति तथा लाभ भी प्राप्त करने वाले होंगे। आप एक पराक्रमी तथा प्रतापी पुरूष होंगे एवं समाज में अपना पूर्ण प्रभुत्व स्थापित करने में समर्थ रहेंगे धनैश्वर्य एवं वैभव का आपके पास कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आप स्त्री के हमेशा वश में रहेंगे तथा उसके वशीभूत होकर ही अधिकांश सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। आप एक क्रियाशील व्यक्ति होंगे तथा कई कार्यों को करने में आप निपुणता प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों में आपकी पूर्ण श्रद्धा तथा सेवा की भावना रहेंगी। आप की रूचि धन संग्रह करने के प्रति भी प्रेरित रहेगी। इसके अतिरिक्त अपने

बंधु वर्ग की भलाई करने में भी आप हमेशा तत्पर रहेंगे तथा यत्नपूर्वक उनकी सहायता करेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप सज्जन पुरूषों तथा समाज की सेवा में सम्मान पूर्वक तत्पर रहेंगे। आप पांडित्य तथा प्रतिभा से भी हमेशा सुशोभित रहेंगे। आपका शरीर सुंगध से युक्त रहेगा परन्तु शरीर के अंग दुर्बल एवं शिथिल होंगे। आपको घूमने का बहुत शौक होगा तथा अपना अधिकांश समय भ्रमण एवं यात्राओं के आवागमन में ही व्यतीत करेंगे। किसी भी वस्तु के क्रय एवं विक्रय करने में आप हमेशा निपुण रहेंगे तथा समाज में आप किसी देवता के नाम से अपना दूसरा नाम रखकर प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपका शरीर समय समय पर कई रोगों से भी ग्रसित रहेगा फलतः आप कष्टानुभूति करेंगे। आप अपने समस्त सम्बन्धियों तथा बन्धुओं का हृदय से उपकार करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के कारण आप को समाज में अपयश तथा निरादर भी मिलेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप एक धैर्यशाली पुरूष होंगे तथा अपने समस्त कार्यों को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। न्याय में आपकी प्रबल आस्था रहेगी तथा स्वयं भी एक न्यायप्रिय व्यक्ति होंगे तथा निष्पक्ष रूप से अपनी बातों को अन्य जनों के सम्मुख प्रस्तुत करेंगे फलतः आप समाज में पंच की या मध्यस्थ की भूमिका चतुराई से निर्वाह करेंगे। साथ ही आपकी संतति संख्या अल्प रहेगी तथा भाग्योदय भी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा तथा उच्चाधिकार प्राप्त करने में भी सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने भाई बन्धुओं को कुछ न कुछ अवश्य देते रहेंगे लेकिन आप स्वभाव से ही अधिक बोलने वाले होंगे जिससे कभी कभी अन्य जन आपसे दूर रहना ही अधिक पसन्द करेंगे। ज्योतिष विद्या के विषय में आपको विस्तृत ज्ञान रहेगा तथा बन्धु एवं सेवकों के प्रति आपके मन में विशेष अनुराग रहेगा अर्थात् आप सबसे प्रेम तथा स्नेह का व्यवहार सम्पन्न करेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप असमय तथा अकारण ही क्रोध भी करेंगे तथा इससे आप दुःख की अनुभूति करेंगे। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर होगी जिससे समाज के अन्य लोग आपसे प्रसन्न रहेंगे। आपका हृदय दया तथा करूणा की भावना से भी पूर्ण रूप से युक्त रहेगा। आपके नेत्रों में चंचलता का भाव भी विद्यमान रहेगा परन्तु जीवन में आपकी आथिक स्थिति काफी डाँवाडोल रहेगी कभी यह बहुत अच्छी रहेगी तथा कभी बहुत खराब। अतः आथिक क्षेत्र में आप विषम परिस्थितियों से गुजरेंगे। आप घर में अपने आपको अत्यन्त बलवान समझेंगे परन्तु घर से बाहर एकदम निर्बलता का अनुभव करेंगे। साथ ही व्यापार के कार्य में आप हमेशा तत्पर रहेंगे एवं मित्र वर्ग से आपका विशेष स्नेह एवं सहयोग का भाव रहेगा। इसके अतिरिक्त आप विदेश में भी निवास करेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

जीवन में वाहनों का आपको अभाव नहीं रहेगा तथा कार मोटर आदि से सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी प्रवृति दानशील होगी तथा यदा कदा आप अपनी इस प्रवृति का पालन करते रहेंगे। धन एवं वैभव से भी आप हमेशा युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त मित्र वर्ग से भी आपका गहन स्नेह रहेगा।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप कभी कभी अधिक बातों को करने वाले होंगे। आप का चित्त कठोरता से युक्त रहेगा तथा दया एवं करूणा के भाव की इसमें न्यूनता रहेगी। आप में साहसी व्यक्ति के लक्षण परिलक्षित होगे तथा साहसिक कार्यो को करने के लिए सदा तत्पर रहेंगे। आप छोटी छोटी बातों पर शीघ्र ही उत्तेजित या क्रोधित भी होंगे। अपने कार्यो को सिद्ध करने के लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आपका शरीर बलवान होगा अतः अन्य लोगों से आप का विवाद चलता रहेगा एवं अधिकांश जनों से आपका वैमनस्य भी रहेगा। अतः आपको अन्य लोगों के विनम्रता का व्यवहार करना चाहिए।

आप अपने जीवन काल में प्रमेह तथा उन्माद रोगों से भी पीड़ित रह सकते है।

आपकी मुखाकृति भी सामान्य सुन्दर होगी तथा आपकी वाणी कभी कभी इतनी कठोर होगी कि सुनने वाला अत्यन्त ही कष्टानुभूति करेगा। अतः अपने सम्भाषण में आपको मधुर शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वतंत्र प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा अपने समस्त कार्यकलापों को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप या दवाब के पूर्ण करना चाहेंगे। आप धन को एकत्रित करने के प्रति सजग रहेंगे तथा यत्नपूर्वक इसका संचय करेंगे। आप अपने क्षेत्र में पूर्ण प्रशिक्षित होंगे तथा सम्मान के पात्र समझे जाएंगे। गुण ग्राहयता की शक्ति से आप सुशोभित रहेंगे तथा अच्छी बातों को शीघ्र ही ग्रहण करेंगे परन्तु आपकी एक कमजोरी यह रहेंगी कि आप कभी कभी स्वयं अपनी प्रशंसा अपने ही मुख से करेंगे जिससे अन्य लोगों पर इसका उचित प्रभाव नहीं पड़ेगा।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य लग्न में स्थित है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं किसी भी प्रकार से शारीरिक रुग्नता का अभाव रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ रहेगी। जीवन में वे आपको अपना आर्थिक तथा अन्य रूप से नित्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे जिससे आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे। साथ ही पिता के द्वारा आपको ख्याति भी अर्जित होती रहेगी।

आपके मन में भी उनके प्रति हार्दिक श्रद्धा एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। साथ ही उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए भी आप तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे लेकिन इसका संबंधों पर विशेष प्रभाव नहीं पडेगा। साथ ही आप जीवन में उनको पूर्ण रूप से आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से कोई कष्ट भी नहीं होने देंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति दशम भाव में है अतः भाई बहिनों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी महसूस करेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह विद्यमान रहेगा। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी उनसे वांछित सहयोग आपको प्राप्त होता रहेगा। तथा नौकरी या यपार संबंध कार्यों में भी वे आपको सहपोग प्रदान करगै।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी परन्तु कई बार मतभेदों के कारण संबंधों में तनाव भी उत्पन्न होगा परन्तु यह अल्प समय तक रहेगा। इसके साथ ही आप आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हें सहयोग प्रदान करते रहेंगे एवं सुख दुःख में भी एक दूसरे का सहायता करते रहेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियां, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिलकरण, गुरुवार, चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशिस्थ चन्द्रमा सदैव अशुभ फलदायी रहेंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य, व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण तथा अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही गुरुवार चतुर्थ प्रहर तथा धनुराशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वजित रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा एवं स्वास्थ्य के प्रति भी पूर्ण रूप से सचेत रहें।

यदि आपके लिए परिस्थितियां अनुकूल न हो मानसिक अशान्ति शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधाएं तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्य सफल नहीं हो रहे हों तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी का पूजन करना चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, रजत, हीरा, चावल, दूध, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन इत्यादि पदार्थो का श्रद्धा पूर्वक किसी योग्य पात्र को दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में न्यूनता होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप किसी यो3गय विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए। इससे आपके लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

महन्त श्री पं जितेन्द्र कुमार शास्त्री S/O श्री जगदीश प्रसाद शर्मा
श्री दोघडीया माता मंदिर नारायणपुर रोड़ निमडी सुरजनपुर थानागाजी
9414960706/ 9829674714
panditjidhogadyama@gmail.com